REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331 (UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

कुमाऊँ मण्डल के भौतिक प्रदेशों में जनांकिकीय पहलुओं का बदलता स्वरूप

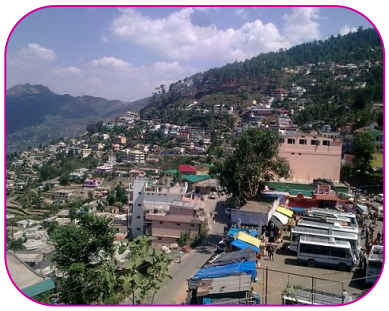

Ramendra Kumar
Research Scholar , Department of Geography, HNB Garhwal Central University, Srinagar (Garhwal) , Uttarakhand.

Abstract

जनसंख्या का असमान वितरण हिमालयी राज्यों की एक बड़ी समस्या है। उत्तराखण्ड राज्य की अधिकतम जनसंख्या राज्य के निम्न ऊँचाई वाले दक्षिणी भाग (तराई-भाबर) पर केन्द्रित है जबकि अधिकतम भू-भाग उत्तर में अधिक ऊँचाई तक फैला हुआ है। यही कारण है कि जम्मू-कश्मीर के दो भाग जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश के दो भाग ऊपरी तथा निचला तथा उत्तराखण्ड के दो भाग पर्वतीय एवं दून-भाबर-तराई उप भाग बन गये हैं। जनसंख्या वितरण के इस प्रतिरूप ने इन राज्यों में जनांकिकी, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा कई अन्य समस्याएं पैदा कर दी हैं। अध्ययन क्षेत्र जो कि उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ मण्डल के अन्तर्गत आता है यहाँ के सेवाकेन्द्रों पर मानव आवश्यकताओं के अनेक संसाधनों के होने से पर्वतीय क्षेत्रों से होने वाले आन्तरिक प्रवास को बढ़ावा मिला है जिससे यहाँ की जनांकिकी संरचना के सभी पक्षों जैसे- जनसंख्या का आकार एवं वितरण, जनसंख्या का घनत्व, जनसंख्या वृद्धि, लिंगानुपात, साक्षरता, जातीय संरचना, व्यावसायिक संरचना आदि पर व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है। यहाँ के प्राकृतिक संसाधनों एवं मानव निर्मित संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव बढ़ता ही जा रहा है। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए इस विषय को अध्ययन हेतु चुना गया है। अध्ययन में जनांकिकीय परिवर्तित से होने वाले स्वरूपों के कारणों का भी उल्लेख एवं समस्या के समाधान हेतु उचित सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

Key Words: जनांकिकीय, कुमाऊँ, वृद्धि, वितरण।

INTRODUCTION

भूमण्डल पर जनसंख्या के परिवर्तन का साक्षात स्वरूप भारत देश में देखने को मिलता है। भारत देश के पास विश्व की समस्त भूमि का केवल २.४ प्रतिशत भाग ही है जबकि जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान है। यहाँ पर संसार की १७.५ प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है तथा आधे बिलियन से अधिक भारतीय २५ वर्ष से कम आयु के हैं। आदि काल से वर्तमान तक भारत की जनसंख्या कई गुना बढ़ी है साथ ही साथ यहाँ जनसंख्या वितरण में अत्यधिक असमानता है। जनसंख्या वितरण की यह असमानता यहाँ की जलवायु, स्थलाकृति, भूमि, मिट्टी, जल, प्राकृतिक वनस्पति, संस्कृति, तकनीकी विकास और राजनीतिक कारकों पर निर्भर करती है।

उत्तराखण्ड में उच्चावचन, जलवायु तथा आवागमन के साधन आदि कारक जनांकिकीय तत्वों को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। जनसंख्या का दो-तिहाई भाग दून घाटी, तराई एवं भाबर में संकेन्द्रित है इसमें क्षेत्रीय असन्तुलन की समस्या उत्पन्न हो गयी है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी हरिद्वार एवं ऊधम सिंह नगर जिले मेल नहीं खाते हैं। इसके अलावा दूसरी बड़ी समस्या पर्वतीय ग्रामीण अंचलों से नगरीय एवं दून-तराई-भाबर की ओर प्रवास की बढ़ती प्रवृत्ति है। राज्य में जिस गति से आवागमन एवं सुख-सुविधाओं की वृद्धि हुयी है उस गति से स्थानीय लोगों तथा नौजवानों के लिए रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं हुए हैं। तकनीकी विकास एवं वैज्ञानिक प्रगति के उपयोग के साथ पर्वतीय कृषि का स्वरूप निरन्तर पतन की ओर है।

उत्तराखण्ड भारत का नवसृजित राज्य है। उत्तर प्रदेश से पृथक पर्वतीय राज्य मांग एवं जन आन्दोलन के परिणामस्वरूप ९ नवम्बर, २००० को अस्तित्व में आए भारतीय गणतंत्र के २७वें तथा हिमालयी क्षेत्र के ११वें राज्य के रूप में उत्तराखण्ड की सम्पूर्ण जनसंख्या वर्ष २००१ की जनगणना के अनुसार ८४८६३४६ थी। जनगणना २०११ के आंकड़ों के अनुसार उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या १००८६२६२ है जो भारत की कुल जनसंख्या का ०.८३: है। उत्तराखण्ड को मुख्यतः २ मण्डलों में बाँटा गया है- गढ़वाल और कुमाऊँ मण्डल। कुमाऊँ मण्डल में ७४५७ ग्राम, ४१

विकासखण्ड, ३८ तहसील तथा ६ जिले हैं जबकि गढ़वाल मण्डल में ६३३६ ग्राम, ५६ विकासखण्ड, ४० तहसील तथा ७ जिले सम्मिलित हैं। जनसंख्या की दृष्टि से कुमाऊँ मण्डल में उत्तराखण्ड की ४१.६२ः जनसंख्या निवास करती है।

AREA OF THE STUDY

कुमाऊँ मण्डल भारतवर्ष के उत्तराखण्ड राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है। उत्तराखण्ड राज्य के दो प्रमुख मण्डल गढ़वाल एवं कुमाऊँ हैं। पूर्वी भाग कुमाऊँ मण्डल एवं पश्चिमी भाग गढ़वाल मण्डल के नाम पर जाना जाता है। कुमाऊँ मण्डल के उत्तर में तिब्बत (चीन) तथा पूर्वी भाग में नेपाल इसकी अन्तर्राष्ट्रीय सीमायें निर्धारित करती हैं। दक्षिणी भाग में उत्तर प्रदेश के बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली तथा पीलीभीत जनपद इसकी सीमायें निर्धारित करती हैं।

भौगोलिक दृष्टि से कुमाऊँ मण्डल ७८°४५' पूर्वी देशान्तर से ८१°१' पूर्वी देशान्तर तथा २८°४४' उत्तरी अक्षांश से ३०°४९' उत्तरी अक्षांश के मध्य २१०३४ वर्ग किमी६ पर फैला है (चित्र १)। प्रशासनिक दृष्टि से इसे ६ जनपदों- अल्मोड़ा, बागेश्वर, चम्पावत, नैनीताल, पिथौरागढ़ तथा ऊधम सिंह नगर के ४१ विकासखण्डों में विभाजित किया गया है। नैनीताल भारत के प्रमुख पर्यटक

स्थलों में से एक है।

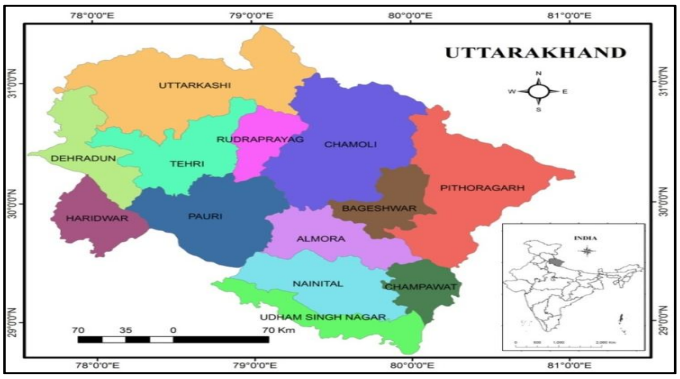

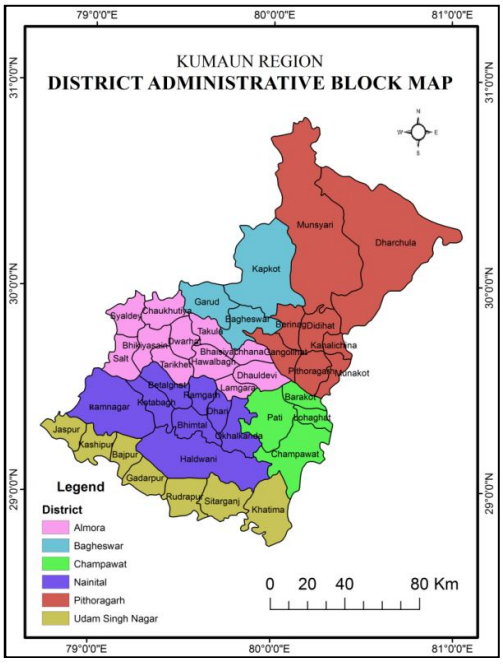

Fig. 1 Location of the Study Area

Objective

कुमाऊँ मण्डल की जनसंख्या के वितरण स्वरूप का भौतिक संरचना के अनुरूप विभिन्नताओं का मूल्यांकन करना।

Methodology

कुमाऊँ मण्डल में भौतिक प्रदेशों (Physiographic Zones) के सीमांकन तथा मानचित्रण के लिए प्रत्येक विकासखण्ड को क्षेत्रफल के आधार पर उसकी स्थिति को स्पष्ट किया गया है (चित्र २ एवं ३)। लघु हिमालय, कुमाऊँ मण्डल के लगभग) भू-भाग (४८.४३ प्रतिशत) पर विस्तृत है।

मुख्य तौर पर द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से विकासखण्ड स्तर पर विश्लेषण किया गया है तथा उन आंकड़ों को भौगोलिक सूचना प्रणाली की सहायता से जानने का प्रयास किया गया है। सर्वप्रथम २००१ और २०११ की जनगणना के अनुसार सम्पूर्ण कुमाऊँ मण्डल में ग्राम स्तर के आंकड़ो को विकासखण्ड स्तर पर समायोजित किया गया है। तत्पश्चात भौतिक प्रदेश एवं विकासखण्ड स्तर को इकाई मान कर सम्पूर्ण कुमाऊँ मण्डल के जनसंख्या सम्बन्धी स्वरूप का विश्लेषण किया गया है।

१९७१ और २०११ की जनगणना आंकड़ों के आधार पर जनसंख्या के बदलते स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। कम्प्यूटर के माध्यम से कोडिंग द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

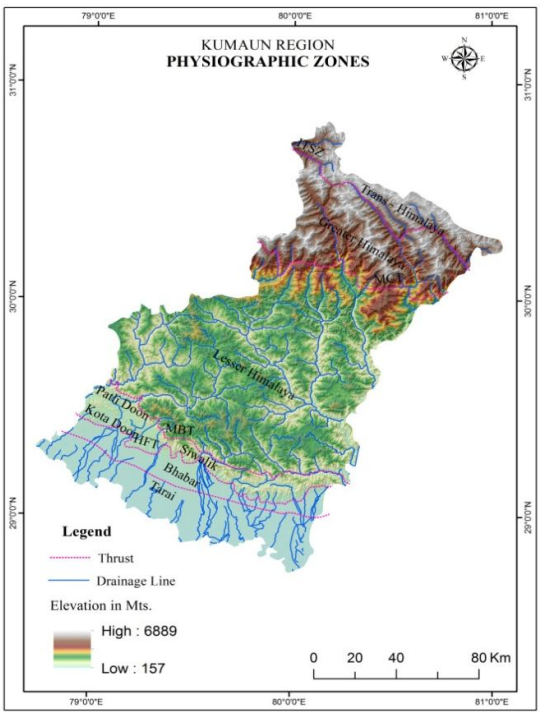

Fig. 2

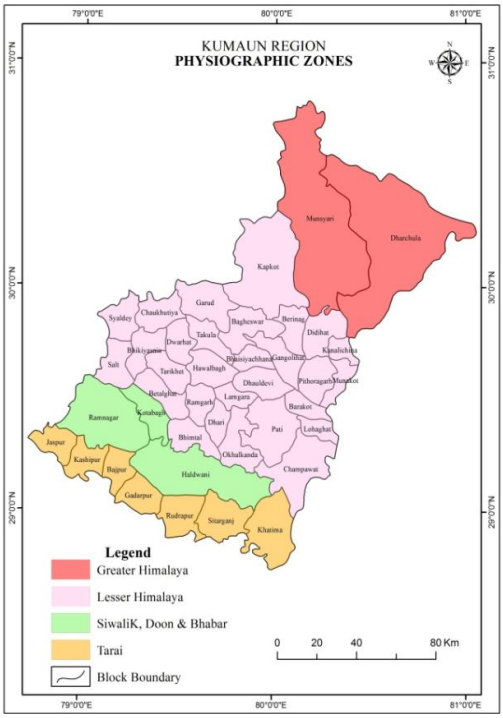

Fig. 3

जनांकिकीय पहलुओं का परिवर्तन स्वरूप (1971–2011) (Changing Pattern of Demographical Aspects)

कुमाऊँ मण्डल के भौतिक प्रदेशों में जनसंख्या आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि यहाँ के पहाड़ी स्थलों की तुलना में तराई-भाबर में मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की उपलब्धता होने के कारण जनसंख्या वितरण में दशक दर दशक सघनता होती जा रही है (तालिका १ एवं चित्र ४)।

Table 1

Distribution of Population in Physiographic Zones (1971-2011)										
Physiographic Zones	**1971**	**%**	**1981**	**%**	**1991**	**%**	**2001**	**%**	**2011**	**%**
Greater Himalaya	72506	3.91	72994	3.06	96364	3.27	107635	3.02	112212	2.65
Lesser Himalaya	1139267	61.44	1393669	58.46	1557659	52.91	1711839	48.01	1795574	42.46
Siwalik, Doon & Bhabar	190818	10.29	257488	10.80	365002	12.40	510295	14.31	672310	15.90
Tarai	451717	24.36	659622	27.67	924856	31.42	1235614	34.66	1648902	38.99
Kumaun Region	**1854308**	**100**	**2383773**	**100**	**2943881**	**100**	**3565383**	**100**	**4228998**	**100**

Source- Census of India 1971-2011

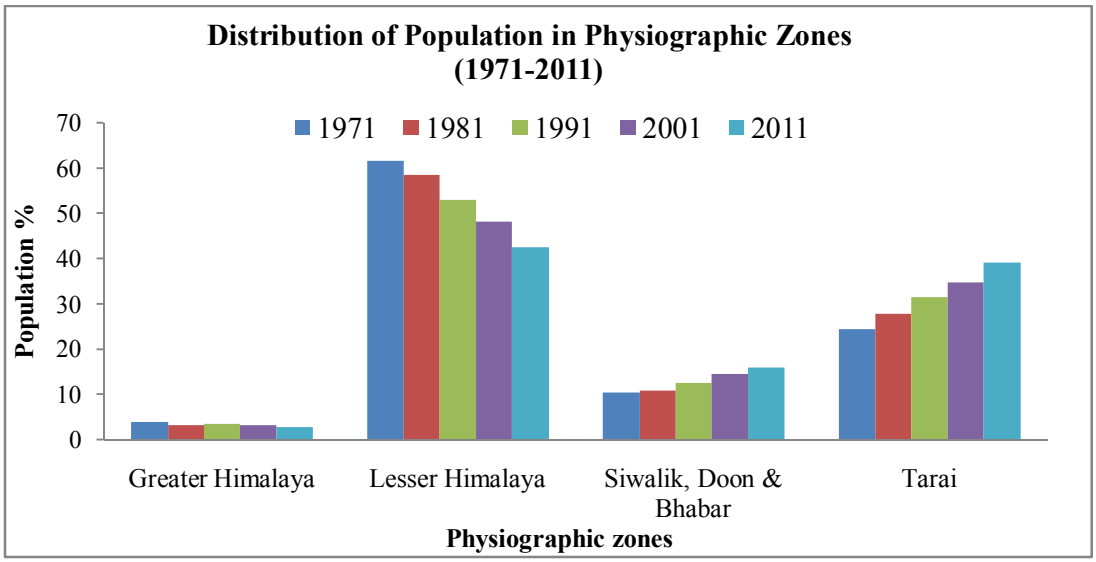

Fig. 4

तालिका १ एवं चित्र ४ से स्पष्ट होता है कि वृहद् हिमालय प्रदेश में जनगणना वर्ष १९७१ में सम्पूर्ण कुमाऊँ मण्डल की ३.९१ प्रतिशत जनसंख्या निवास करती थी जबकि १९८१ में ०.८५ प्रतिशत की कमी हो गयी थी। १९९१ में पुनः मामूली वृद्धि (.२१ प्रतिशत) पायी गयी। पिछले दशक की तुलना में सन् २००१ एवं २०११ में क्रमशः .२५ प्रतिशत एवं .६२ प्रतिशत की कमी हो गयी।

लघु हिमालय प्रदेश की संकीर्ण घाटियों एवं पर्वतीय ढालों पर सन् १९७१ में कुल जनसंख्या का ६१.४४ प्रतिशत भाग निवास करता था, जिसमें दशक दर दशक कमी होती जा रही है। जहाँ १९७१ में ६१.४४% जनसंख्या निवास करती थी वहीं १९८१, १९९१, २००१ एवं २०११ में यह घटकर क्रमशः 58.46%, 52.91%, 48.01% एवं 42.46% हो गयी है, जबकि लघु हिमालय में कुमाऊँ मण्डल के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का सर्वाधिक भाग (48.43%) आता है। लघु हिमालय में १९७१ से २०११ के मध्य 18.98% जनसंख्या की कमी हो गयी है, जिसका मुख्य कारण मानवीय सुख-सुविधाओं (बिजली, पेयजल, चिकित्सालय, परिवहन मार्ग, रोजगार इत्यादि) की कमी होना है। अतः यहाँ के सम्पूर्ण विकास हेतु भारत सरकार द्वारा इस प्रदेश विशेष के लिए नियोजित ढंग से **''पर्वतीय विकास नीति''** (Mountain Development Policy) का निर्माण करना होगा जो तराई एवं मैदानी क्षेत्रों की नीतियों से भिन्न हो।

शिवालिक, दून एवं भाबर प्रदेश के अन्तर्गत १९७१ से २०११ के मध्य ५.६१ प्रतिशत की जनसंख्या वृद्धि हो गयी है। तराई प्रदेश में आवागमन के साधनों की प्रचुर उपलब्धता, सड़कों का विकास एवं मानवीय बसाव के अनुकूल अनेक परिस्थितियाँ विद्यमान हैं। भौगोलिक कारकों में समतल मैदान, जल संसाधनों की उपलब्धता, कृषि योग्य सिंचित भू-भाग के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक कारकों में उत्तम शैक्षणिक संस्थान, स्वास्थ्य सुविधाएं, परम्परागत बाजार और परिपक्व संस्कृति जैसी अनेक सुविधाओं ने इस भौतिक प्रदेश में जनसंख्या के वितरण को प्रभावित किया है।

तालिका २ तथा चित्र ५ से कुमाऊँ मण्डल के भौतिक प्रदेशों में जनसंख्या घनत्व के वितरण को दर्शाया गया है।

Table 2

Population Density in Physiographic Zones (1971-2011)				
Year	**Greater Himalaya**	**Lesser Himalaya**	**Siwalik, Doon & Bhabar**	**Tarai**
1971	13	111	71	171
1981	13	136	95	250
1991	17	152	135	350
2001	19	167	189	468
2011	20	175	249	625

Source- Census of India 1971-2011

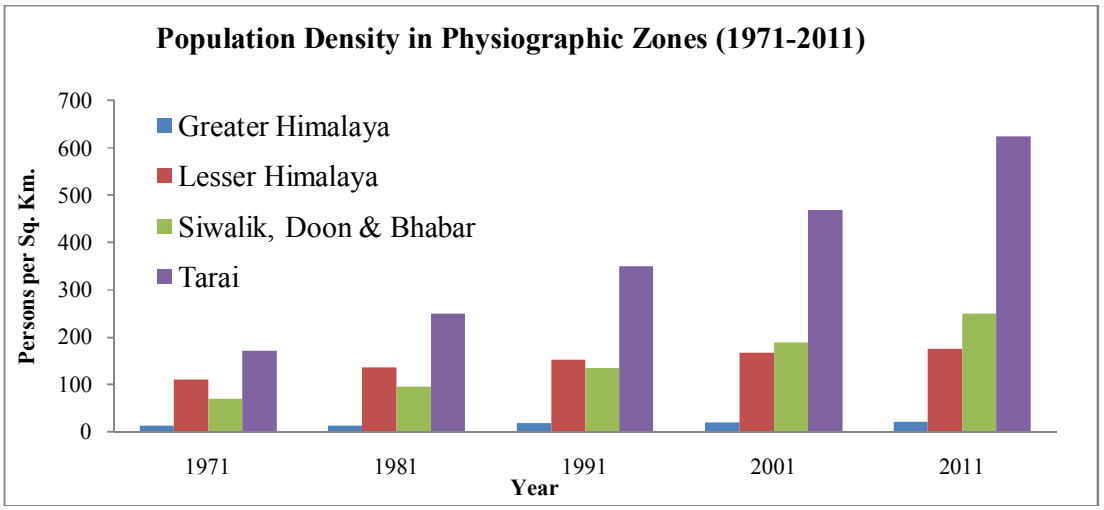

Fig. 5

मानचित्र से स्पष्ट हो रहा है कि वृहद् एवं लघु हिमालय में जनघनत्व कम तथा दून, शिवालिक, भाबर एवं तराई में जनघनत्व अधिक पाया जाता है (२०११)। मण्डल के वृहद् हिमालय में २० व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर से कम जनसंख्या देखने को मिलती है, इसका कारण यह है कि इस क्षेत्र में समतल भूमि, कृषि उत्पादक क्षेत्र, सिंचाई के साधन तथा आवागमन के साधनों का अभाव है। मध्यम जनघनत्व मण्डल के लघु हिमालय में देखने को मिलता है जबकि यहाँ कुमाऊँ मण्डल के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का सर्वाधिक भाग (४८.४३:) आता है। सन् २०११ के अनुसार तराई प्रदेश का जनसंख्या घनत्व ६२५ है जो १९७१ में मात्र १७१ व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर था। तराई प्रदेश में उच्च जनघनत्व देखने को मिलते हैं (तालिका २) जिसका प्रमुख कारण यह है कि तराई क्षेत्र में मानव जीवन के लिए पर्याप्त संसाधनो की उपलब्धता है।

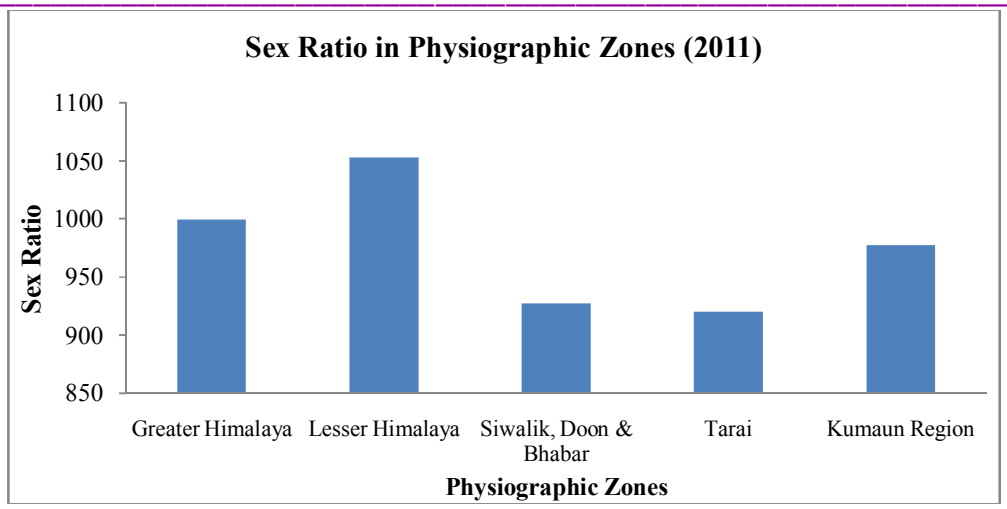

Fig. 6

चित्र ६ से स्पष्ट होता है कि लघु हिमालय में सबसे अधिक (१०५३) लिंगानुपात पाया जाता है जबकि तराई प्रदेश में सबसे कम (९२०) लिंगानुपात पाया जाता है। वृहद् हिमालय तथा शिवालिक, दून एवं भाबर प्रदेशों का लिंगानुपात क्रमशः ९९९ तथा ९२७ है। कुमाऊँ मण्डल के पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ पर पुरूष वर्ग रोजगार हेतु वाह्य क्षेत्रों के लिए प्रवासित होते हैं वहाँ पर महिलाओं की संख्या अधिक रह जाती है। इसके परिणाम स्वरूप लिंगानुपात अधिक होता है। इसके विपरीत जहाँ पर पुरूष वर्ग में अन्तः प्रवास की प्रक्रिया अधिक होती है, उन क्षेत्रों में लिंगानुपात कम होता है। वर्तमान समय में पर्वतीय क्षेत्रों में लिंगानुपात कम एवं ज्यादा होने का प्रमुख कारण प्रवास ही है जबकि शिशु-लिंगानुपात (०-६) में वृहद् हिमालय के पिथौरागढ़ विकासखण्ड में मात्र ७३४ बालिकायें १००० बालकों के सापेक्ष अंकित की गयी हैं (२०११)। जो भविष्य के लिए एक गम्भीर समस्या का कारण बन सकता है।

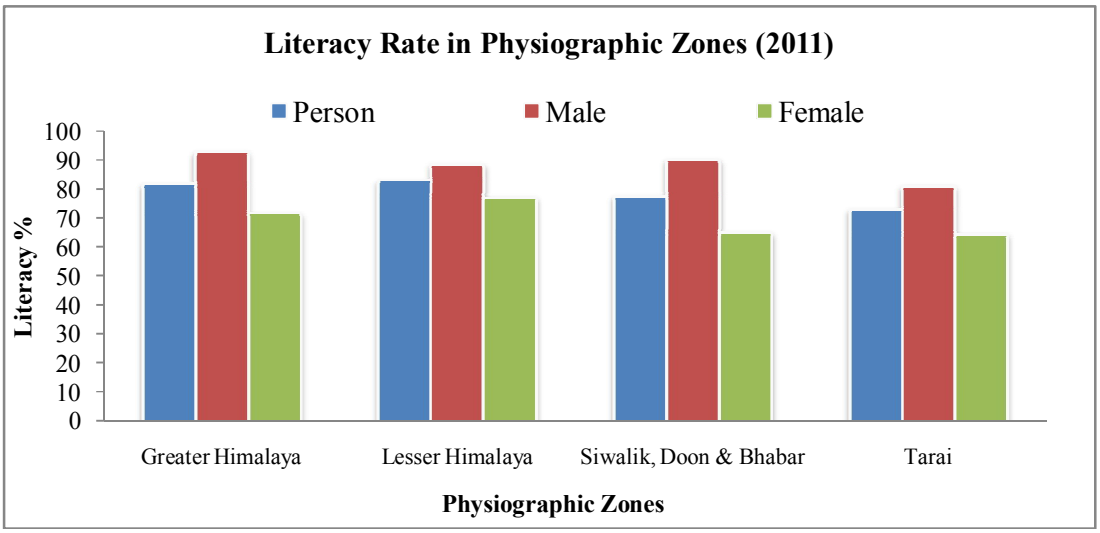

Fig. 7

अध्ययन क्षेत्र में सन् १९७१ में कुल जनसंख्या का केवल ३०.०८ प्रतिशत भाग ही साक्षर था जो बढ़ते-बढ़ते २०११ में ७८.५२ प्रतिशत हो गया। जनगणना २०११ के अनुसार कुमाऊँ मण्डल में पुरूषों की साक्षरता दर ८७.३६ प्रतिशत है, जबकि महिलाओं की साक्षरता दर काफी कम मात्र ६९.६१ प्रतिशत है। इसका प्रमुख कारण निम्न आर्थिक स्तर, दुर्गम क्षेत्र, पर्वतीय क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं का अपेक्षाकृत दूर स्थित होना है।

चित्र ७ से स्पष्ट हो रहा है कि सबसे अधिक कुल साक्षर व्यक्तियों का प्रतिशत (८३.०६) एवं महिला साक्षरता दर का प्रतिशत (७७.१९) लघु हिमालय में पाया जाता है जबकि सबसे अधिक पुरूष साक्षरता (९२.८९) वृहद हिमालय

में पायी जाती है। कुमाऊँ मण्डल की साक्षरता दर भारत की साक्षरता दर से ५.५४ः अधिक है किन्तु उत्तराखण्ड राज्य के लगभग समान है। कुमाऊँ मण्डल के सभी भौतिक प्रदेशों में प्राथमिक विद्यालयों, केन्द्रीय विद्यालयों, इन्टर कालेजों एवं महाविद्यालयों की संख्या में वृद्धि हुई है जिससे साक्षरता दर में दिन प्रतिदिन सुधार होता जा रहा है।

CONCLUSION

कुमाऊँ मण्डल के जनसंख्या वितरण के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र के पहाड़ी स्थलों की तुलना में तराई-भाबर क्षेत्रों में मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की उपलब्धता होने के कारण जनसंख्या वितरण सघन है। तराई-भाबर क्षेत्रों में आवागमन के साधनों की प्रचुर उपलब्धता सड़कों का विकास एवं मानवीय बसाव के अनुकूल अनेक परिस्थितियाँ विद्यमान हैं। भौगोलिक कारकों में समतल भू-भाग, जल संसाधनों की उपलब्धता, कृषि योग्य सिंचित भूखण्ड के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों में उत्तम शैक्षणिक संस्थान, स्वास्थ्य सुविधाएं, परम्परागत बाजार और परिपक्व संस्कृति जैसी अनेक सुविधाओं ने इस मण्डल में जनसंख्या के वितरण को प्रभावित किया है।

जनगणना १९७१ से २०११ तक के आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि कुमाऊँ मण्डल में दशक दर दशक जनांकिकीय पहलू में बहुत अधिक परिवर्तन देखने को मिला है। जहाँ एक ओर वृहद एवं लघु हिमालय प्रदेशों की जनसंख्या प्रतिशतता में कमी आ रही है, वहीं दूसरी ओर शिवालिक, दून, भाबर एवं तराई प्रदेशों की जनसंख्या प्रतिशतता में तीव्र वृद्धि होती जा रही हैं। अतः समस्त भौतिक प्रदेषों के जनांकिकीय पहलुओं में एकरूपता (समग्र विकास) लाने के लिए अलग-अलग योजना तैयार करनी होगी तथा **'पर्वतीय विकास नीति'** को अति शीघ्र लागू करना होगा।

REFERENCES

Census of India 1951-2011.

Census, 2001. Map Profile Census, India, States and Union Territories. Registrar and Census Commissioner, India. New Delhi.

Chandna, R.C. & Sidhu, M. (1980). *Introduction to Population Geography*, New Delhi: Kalyani Publishers.

Chauniyal, D.D. & Chauniyal, Savita, (2007). *Demographic Profile of the Himalaya Region .The Himalayan Geographer*. Garhwal: Pp 33-49.

Clarke, Jone I. (1972). *Population Geography*, Oxford, 2nd edn. Pp 22.

Jalal, D.S., 1988. Geographical Perspective of Kumaun. In Valdiya, K.S. (Ed), Kumaun Land and People. Gyanodaya Prakashan, Nainital, Page 13-16.

Kumar, R., and Pathak, N.P., 2011. "मध्य प्रदेष में जनजातियों की जनसंख्याः एक भौगोलिक अध्ययन". "Research Strategy" A National Research Journal of Geographical & Environmental Thought I.S.S.N.: 2250-3927 Vol. I, Pp.80-83.

Kumar, R., Chauniyal, D.D. & all, Oct – 2015. "Changing Pattern of Population in Kumaun Region of Uttarakhand", Golden Research Thoughts, international multidisciplinary research journal, vol. V, pp. 1-6.

Kumar, R., Kashyap, A. and Naithani, B.P., Oct – 2015. ''जनपद हरिद्वार में जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का तुलनात्मक अध्ययन (जनगणना रिपोर्ट 2001–2011 के विषेष सन्दर्भ में): एक भौगोलिक अध्ययन'' Review of Research, International Recognition Multidisciplinary Research Journal, Vol. V, Pp. 1-6.

Kumar, R. and Singh, D., March - 2016. ''भारतीय परिप्रेक्ष्य में जनजातीय जनसंख्या का विकास'' Indian Streams Research Journal, International Recognition Multidisciplinary Research Journal, I.S.S.N.: 2230-7850 Vol. VI, Pp. 1-6.

Kumar, R. and Singh, D., June - 2016. ''भारतीय जनजातियों की जनसंख्या का वितरण एवं घनत्वः एक प्रतीक अध्ययन (मध्य प्रदेष के विषेष सन्दर्भ में)'' Vaichariki, A Multidisciplinary Refereed International Research Journal, I.S.S.N.: 2249-8907 Vol. VI, Pp. 305-312.

Kumar, R. and Daundriyl, A., August-2017; "**भिलंगना नदी घाटी में पर्यटन के स्थल**", for publication in " Review of Research" Journal. International Recognition Multidisciplinary Research Journal, Vol. VI, Pp. 10-18.

Kumar, R. Chauniyal, D. D. and Dutta, S., (2016). Demographical Profile of the Kumaun

Himalaya (Uttarakhand). *Research Strategy*, Vol. 6th, Department of Geography, VSSD College, Kanpur. Pp19-29.

Kumar, R. Chauniyal, D. D. and K, Gyanendra., (2018). Changing Pattern of Literate Population and Predicted Literacy Rate in Kumaun Region. Geographical Personality of India and National Security. Pratyush Publications, Delhi. Pp 433-447.

त्रिपाठी, केशरी नन्दन, २०१६: उत्तराखण्ड, बौद्धिक प्रकाशन, B. 4A, श्रीराम भवन, देवनगर, झूंसी, इलाहाबाद पृ६ ११७-११८।

नित्यानन्द, २००४: उत्तरांचल, ऐतिहासिक परिदृश्य एवं विकास के आयाम, उत्तरांचल उत्थान परिषद, १११-मोती बाजार, देहरादून पृ६ १४.१५।

सिंह, सविन्द्र, २००७: भूआकृति विज्ञान, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, पृ६ ५४४।

Ramendra Kumar
Research Scholar , Department of Geography, HNB Garhwal Central University, Srinagar (Garhwal) , Uttarakhand.